५. प्रमाण

दिनांक २४/०९/२०११

प्रमाण का स्वरुप अनुभव, विचार, व्यवहार,प्रयोग के रूप में देखा गया है | अनुभव प्रमाण को अस्तित्व दर्शन ज्ञान,जीवन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान के स्वरुप में देखा गया है | विचार प्रमाण को अनुभव के आधार पर होना समझा गया है | सोच विचार,समझ के आधार पर ही योजना का कार्य योजना होना स्वाभाविक है | कार्य योजना का फल-परिणाम होना क्रियान्वयन विधि से स्पष्ट होता है जो फल-परिणाम के रूप में देखा जाता है | फल को समाधान के रूप में देखा गया है अर्थात समझदारी सहित किया गया कार्य-व्यवहार, समाधान के रूप में ही होता है | समाधान सम्पन्नता हर मानव की आवश्यकता है | यह अनुभव प्रमाण के आधार पर ही हो पाता है | समाधान ही सुख, सुख ही मानव धर्म के रूप में देखा गया है | हर मानव अथवा हर नर-नारी सुखी होना ही चाहता है | सुखी होने के लिए ही सभी कार्य करता है | तीसरी स्थिति में व्यवहार प्रमाण | व्यवहार प्रमाण में न्याय का प्रमाण होता है | दूसरा विधि से मानव को न्याय प्राप्त होता ही नहीं | अभी तक मानव ने जब से धरती पर आया है, न्याय का प्रयत्न किया है,अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है |

इसे देखते हुए पता चलता है कि अनुभव विधि से समाधान प्रमाण होना विदित होता है | विचार प्रमाण के आधार पर न्याय सुलभ होना होता है | सर्वतोमुखी समाधान ही न्याय रूप में प्रमाणित होता है | चौथा भाग प्रयोग प्रमाण | प्रयोग प्रमाण ही कार्य है | कार्य का आशय उत्पादन कार्य | उत्पादन कार्य को करते हुए,स्रोत को बचाते हुए, प्रदूषण को बचाते हुए योजना को बनाने की आवश्यकता है | अभी तक प्रौद्योगि की विधि से जो भी उत्पादन कार्य किये हैं उन उत्पादन कार्यों के मूल में, प्रदूषण के आधार के मूल में खनिज कोयला, खनिज तेल ही है | इसके बाद तीसरा विकिरणीय धातुओं का प्रयोग होना देखा गया है |

इन्हीं विकिरणीय धातुओं का प्रयोग सामरिक प्रयोजन के लिए भी किया गया है | इसी से धरती तापग्रस्त हो गयी और प्रदूषण होना पाया गया है | इसी से तमाम प्रकार के रोग, उपद्रव, मानव को उपलब्ध हो गया | इसी सब घटनाक्रम से एवं प्रयोगवादी ऐसे तंत्र से मानव संकटग्रस्त हो गया है | आगे मानव धरती पर रहेगा कि नहीं? यदि रहना है तो लड़ाई के बिना, युद्ध के बिना कैसे जिया जाय, यही प्रश्न आता है | इसके उत्तर में यही आता है कि जितना भी प्रदूषण का आधार है जैसा खनिज कोयला,खनिज तेल,विकिरणीय धातु को सुरक्षित रखते हुए विकल्प को अपनाने की आवश्यकता है |

विकल्पात्मक ऊर्जाका स्वरुप सौर ऊर्जा, हवा तरंग, बायोडीज़ल,बायोगैस के रूप में मानव को उपलब्ध है | गैसीफायर विधि से भी ऊर्जासंग्रह की बात कह रहें हैं | यह बहुत अच्छी बात है | इसका लोकव्यापीकरण करना चाहिए | इस प्रकार से ऊर्जा पांच प्रकार से मानव को उपलब्ध हो चुकी है | मानव इनमें पारंगत हो चुका है ऐसा माना जाता है | बचा हुआ ऊर्जा स्रोत प्रवाह बल के रूप में है | इस पर मानव का ध्यान जाना चाहिए |

यदि मानव इन छः विधियों से ऊर्जा संतुलन प्राप्त करता है तो इसमें मूल बात यही है कि सुविधा संग्रह विधि को त्याग कर उपयोगिता, पूरकता विधि को अपनाने की आवश्यकता है अर्थात विकल्पात्मक विधि से जीने के लिए प्रवृत होते हैं तब धरती अपनी शक्ति से कितना सुधर सकता है देखने को मिलेगा | यदि धरती स्वयं अपने में सुधर सकता है तो मानव धरती पर

चिरकाल तक रह सकता है | इसे ऐसा देखा गया है कि सहअस्तित्व स्वयं अपना प्रतिरूप में ही मानव का प्रस्तुति किया है क्योंकि मानव भी सहअस्तित्व में प्रस्तुत है |

साम्य ऊर्जा न हो ऐसा काल, देश(स्थान) नहीं है | वस्तु न हो ऐसा भी कोई काल नहीं है | इसलिए वस्तु का कमी होना, संतुलित होना होता है | जैसा धरती असंतुलित होने के लिए मानव प्रधान रूप में कारण बना है | यही धरती बीमार होने, प्रदूषण छा जाने के रूप में मिलता है | इससे बाज आना हर मानव का कर्तव्य है | अपने कर्तव्य को समझने के लिए ही चेतना विकास मूल्य शिक्षा का प्रस्ताव है | इसमें पारंगत होने पर ही अपराध, शोषण, युद्ध से मुक्त होना सम्भव है अथवा भ्रम मुक्त होना सम्भव है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत